अध्ययन मार्गदर्शिका  
पुराने नियम के ऐतिहासिक विवरण  
मॉड्यूल एक — यहोशू की पुस्तक का परिचय

दिशानिर्देश : प्रत्येक अध्ययन मार्गदर्शिका को समय संकेतों के साथ खंडों में विभाजित किया गया है जो प्रत्येक मॉड्यूल में शामिल मुख्य श्रेणियों के अनुरूप हैं। अनुभागों में दो मुख्य घटक पाए जाते हैं : **नोट्स लेने की रूपरेखा** और **पुनर्समीक्षा के प्रश्न।** आपको वीडियो व्याख्यान देखते समय **नोट्स लेने की रूपरेखा का उपयोग करना है** और फिर मॉड्यूल प्रश्नोत्तरी की तैयारी के लिए **पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर देना है।** अध्ययन मार्गदर्शिकाओं का उपयोग करने के सर्वोत्तम तरीकों के बारे में अधिक जानकारी के लिए छात्र दिशानिर्देश नियमावली को देखें। साथ ही, अध्ययन मार्गदर्शिकाओं को सेव करना सुनिश्चित करें क्योंकि वे इस पाठ्यक्रम की अंतिम परीक्षा की तैयारी के लिए एक उत्कृष्ट संसाधन होंगी।

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

नोट्स लेने की रूपरेखा

मिनट0:0— 20:16

1. परिचय
2. लेखक और लेखन का समय
   1. पारंपरिक दृष्टिकोण
   2. आलोचनात्मक दृष्टिकोण
   3. सुसमाचारिक दृष्टिकोण
      1. विकास
      2. पूर्णता

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. यहोशू की पुस्तक के लेखक के बारे में तल्मूड में दिए गए कथन का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
2. यहोशू की पुस्तक के लेखक के बारे में मार्टिन नॉथ के विचार का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
3. यहोशू की पुस्तक के रचनात्मक विकास के विषय में सुसमाचारिक दृष्टिकोण का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
4. जब विद्वान इस्राएल के “प्राथमिक इतिहास” की बात करते हैं तो उनका क्या अर्थ होता है?
5. यहोशू 24:3 हमें यहोशू की पुस्तक की समाप्ति की सबसे आरंभिक संभावित समयावधि निर्धारित करने में कैसे सहायता करता है?
6. इस अध्याय के अनुसार, हम कैसे जानते हैं कि राजाओं की पुस्तक कब लिखी गई थी?
7. यहोशू की पुस्तक की समाप्ति की समयावधि के बारे में इस अध्याय का निष्कर्ष क्या है?

नोट्स लेने की रूपरेखा

मिनट 20:1– 56:32

1. रूपरेखा और उद्देश्य
   1. विषय-वस्तु और संरचना
      1. जयवंत विजय (1-12)
      2. गोत्रों को उनका भाग दिया जाना (13-22)
      3. वाचाई विश्वासयोग्यता (23-24)
   2. मूल अर्थ
      1. जयवंत विजय
         1. आदिकालीन संघर्ष
         2. इस्राएल का विशेष संघर्ष
         3. इस्राएल के राजा की भविष्य की विजय
      2. गोत्रों को उनका भाग दिया जाना
         1. आदिकालीन मानवीय अधिकार
         2. इस्राएल का विशेष उत्तराधिकार
         3. इस्राएल के राजा का भविष्य का उत्तराधिकार
      3. वाचाई विश्वासयोग्यता
         1. आदिकालीन मानवीय विश्वासयोग्यता
         2. इस्राएल की विशेष वाचाई विश्वासयोग्यता
         3. इस्राएल के राजा के साथ भविष्य की वाचा

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. यहोशू की पुस्तक में तीन मुख्य प्रकार के साहित्य कौन से हैं?
2. यहोशू की पुस्तक के तीन मुख्य विभाजन क्या हैं?
3. यहोशू की पुस्तक के मूल अर्थ के विषय में इस अध्याय का सारांश लिखिए?
4. यहोशू की पुस्तक के मूल पाठकों के लिए इसकी विषय-वस्तु के अर्थ को समझने में सहायता करने के लिए पवित्रशास्त्र के और कौन-से भाग उपलब्ध थे?
5. यहोशू की पुस्तक के मूल पाठक पेन्टाट्यूक से उस युद्ध के बारे में क्या सीख सकते थे जिसमें वे शामिल थे?
6. हम कैसे जानते हैं कि यहोशू के समय में पूरे विनाश और यहोवा के प्रति समर्पण की आज्ञा असाधारण थी, और उसका विस्तार से अनुकरण नहीं किया जाना चाहिए?
7. इस्राएलियों को कनानियों का पूरी तरह नाश करने की आज्ञा क्यों दी गई थी?
8. उत्पत्ति 15:13-16 यह समझने में हमारी कैसे सहायता करता है कि क्यों कनानियों को पूरी तरह से नाश किया जाना था?
9. इब्रानी क्रिया *“खरम”* का वास्तव में क्या अर्थ है, जिसका प्रयोग कनान के विनाश का वर्णन करने के लिए किया गया है?
10. यहोशू की पुस्तक के लेखक ने अपने पाठकों से गोत्रों के उत्तराधिकारों के बारे में कौन-से धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोण की अपेक्षा की जिनकी वे निगरानी कर रहे थे?
11. यहोशू की पुस्तक के लेखक ने अपने मूल पाठकों से पेन्टाट्यूक से कौन से धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों को ध्यान में रखने की अपेक्षा की जब उन्होंने इस्राएल की वाचाई विश्वासयोग्यता की बुलाहट पर विचार किया?

नोट्स लेने की रूपरेखा

मिनट 56:3– 1:17:55

1. मसीही अनुप्रयोग
   1. उद्घाटन
      1. जयवंत विजय
      2. गोत्रों को उनका भाग दिया जाना
      3. वाचाई विश्वासयोग्यता
   2. निरंतरता
      1. जयवंत विजय
      2. गोत्रों को उनका भाग दिया जाना
      3. वाचाई विश्वासयोग्यता
   3. पूर्णता
      1. जयवंत विजय
      2. गोत्रों को उनका भाग दिया जाना
      3. वाचाई विश्वासयोग्यता
2. V. उपसंहार

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. इब्रानी में “यीशु" नाम को \_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_ कहा जाता है।
   * यहोशू की पुस्तक में बताए गए तीन लक्ष्यों को यीशु कैसे पूरा करता है?
2. मसीह में परमेश्वर के राज्य की पूर्णता के तीन चरण क्या हैं?
3. वर्णन कीजिए कि यहोशू की पुस्तक में मसीह ने अपने राज्य के उद्घाटन के चरण में स्थापित अपेक्षाओं के तीन पहलुओं को कैसे पूरा किया।
4. वर्णन कीजिए कि यहोशू की पुस्तक में मसीह ने अपने राज्य की निरंतरता के चरण में स्थापित अपेक्षाओं के तीन पहलुओं को कैसे पूरा किया।
5. वर्णन कीजिए कि यहोशू की पुस्तक में मसीह ने अपने राज्य की पूर्णता के चरण में स्थापित अपेक्षाओं के तीन पहलुओं को कैसे पूरा किया।